Transform Rural India

कृषक पाठशाला

समेकित आजीविका कृषि फार्म

जिला- खूँटी

Transform Rural India

कृषक पाठशाला

समेकित आजीविका कृषि फार्म

जिला- खूँटी

विषय सूची

1.	हमारा लक्ष्य	3
2.	बदलाव की एक अभिनव पहल	5
3.	मंजिल की ओर बढ़ते कदम	7
4.	समेकित आजीविका कृषि फार्म - सफरनामा	10
5.	समेकित कृषि	12
6.	कृषि बागवानी	14
7.	पशुपालन	25
8.	अन्य सहयोगी स्तम्भ	36
9.	प्रसंस्करण इकाई	41
10.	आवासीय प्रशिक्षण की सुविधा	45
11.	एग्रो टूरिज्म	48
12.	निष्कर्ष	50

हमारा लक्ष्य

वैकल्पिक संसाधनों के साथ-साथ तकनीकी सुविधाओं एवं उन्नत कृषि प्रणालियों का समानांतर तरीके से प्रयोग में लाते हुए ग्रामीणों के पलायन को कम करना। नई तकनीकों से उपज एवं उत्पादों को बढ़ावा देते हुए किसानों की सालाना आय में बढ़ोतरी करवाना। पशुपालन, मिश्रित खेती, मछली पालन, प्रसंस्करण इकाई एवं अन्य कृषि एवं गैर कृषि प्रणालियों से आमजनों को अवगत करते हुए प्रशिक्षित करना एवं किसानों के लिए एक अत्याधुनिक किसान पाठशाला की नींव रखना।

झारखण्ड राज्य के सबसे नवीनतम जिले की जब बात आती है तो खूंटी का नाम सबसे ऊपर दिखाई देता है। राज्य की राजधानी से महज 40 किलोमीटर की दूरी पर स्थित इस शहर का काफी आद्वितीय, दार्शनिक एवं प्राकृतिक सौंदर्य स्थल है। इस आदिवासी बहूल क्षेत्र में रोज़गार के लिए ज़्यादातर लोग खरीफ मौसम की खेती पर आश्रित हैं। खरीफ के मौसम में भी उच्च मूल्य कृषि (कैश क्रॉप) की जगह धान जैसी फसलों पर अपना ध्यान केन्द्रित रखते हैं। जागरूकता के अभाव में यहाँ के लोग आजीविका के नए, वैकल्पिक एवं तकनिकी संसाधनों से वंचित रह जाते हैं। यदि कुछ परिवार बकरीपालन, मुर्गीपालन करते भी हैं तो वह पारंपरिक तरीके और प्रजातियों तक ही सीमित हो कर रह जाते हैं। ऐसी स्थिति में घर की ज़रूरतों को पूरा करने के लिए ग्रामीण पलायन को सहारा मान बैठते हैं एवं वर्ष का अधिकतर समय गाँव-घर से दूर शहर में दिहारी-मजदूरी या अन्य काम कर अपने जीविकोपार्जन किसी तरह निर्वाहन करने का प्रयास करते हैं।

किसी भी उपलब्धि को प्राप्त करने के लिए तीन चीज़ें बहुत ही महत्वपूर्ण होती हैं, दृष्टि, मेहनत और निरंतरता। समेकित आजीविका कृषि पार्क, लोयोंगकेल, कर्रा आज इन्हीं तीन पहलुओं का आधार है। वर्ष 2020 तक यह पार्क महज़ एक भूमि का टुकड़ा था जिसके कुल 23 एकड़ के भू-भाग में से करीबन 10 एकड़ भूमि पर धान के लिए बीज उत्पादन का कार्य किया जाता था। कृषि विभाग के द्वारा इसे बीज गुणन परक्षेत्र के रूप में पहचान मिली हुई थी। मूलतः इसका इस्तमाल खरीफ की खेती के लिए किया जाता था। खरीफ फसलों की कटाई के समय यहाँ स्थित चबूतरे को खलिहान के माफिक इस्तमाल किया जाता था। रबी और ज़ैद के मौसम में यह प्रांगन मवेशियों के लिए महज़ एक चारागाह का केंद्र बन कर रह जाता था।

बदलाव की
एक
अभिनव पहल

जिले के ग्रामीण मुख्यतः खरीफ की खेती, कुछ प्रजातियों तक सीमित पशुपालन पर अपने जीविकोपार्जन के लिए आश्रित रहते हैं। खरीफ के बाद अपने जीविकोपार्जन के लिए यहाँ के लोग दिहाड़ी-मजदूरी पर आश्रित रहते हैं। कई लोग अपने घर को चलाने के लिए पलायन भी करने लगते हैं। ऐसे में सखी मंडलों और उनके परिजनों पर जीविका की ज़िम्मेदारी बढ़ने लगती है। इस समस्या के सतत हल के उद्देश्य से समेकित आजीविका कृषि पार्क को बढ़ावा दिया जा रहा है। उपलब्ध जमीन के सही उपयोग को मद्देनजर रखते हुए कार्ययोजना बनाने के क्रम से ड्रेन टेक्नोलॉजी एवं विकसित प्रणाली को समायोजित किया गया है। जिसके मुख्य घटक निम्नवत हैं-

आजीविका फार्म के अंतर्गत कृषि पाठशाला के माध्यम से आजीविका के वैकल्पिक संसाधनों को बढ़ावा दिया जा रहा है। यह पहल आमजनों को ऐसे वैकल्पिक संसाधनों से अवगत कराने और इन संसाधनों को उनके निजी जीवन का हिस्सा बनाने की है।

आजीविका के नए उपाय जैसे उच्च मूल्य कृषि, सब्जी एवं फलों की खेती, मुर्गीपालन, मछली-सह-बत्तख्पालन, मधुमक्खीपालन-सह-शहद उत्पादन आदि शामिल हैं।

फार्म को बेहतर संसाधन केंद्र बनाने के उद्देश्य से विभिन्न विभागों के साथ समन्वय स्थापित कर अभिसरण के माध्यम से भी कार्यों का निष्पादन किया जा रहा है।

खेत समुदाय के सभी आस-पास के किसानों के लिए कृषि संबंधी सभी गतिविधियों के लिए एक संसाधन प्रकोष्ठ और प्रदर्शन पार्क के रूप में कार्य करेगा। कर्रा आजीविका फार्म-सह-किसान पाठशाला उत्पादक समहू नाम से एक किसान उत्पादक संगठन (एफपीओ) का गठन किया गया है। वर्तमान में इसके 100 सदस्य हैं और भविष्य में लगभग 500 किसानों को जोड़ने का लक्ष्य है।

एकीकृत फार्म मॉडल सुलभ और सस्ती उच्च मूल्य वाली फसल के पौधे और अन्य उत्पाद जैसे बीज रहित नीम्बू, कम लागत वाली मशरूम की किस्म और खेती के तरीके, मुर्रा भैंस बछड़ा आदि प्रदान करेगा।

मंजिल की ओर बढ़ते कदम

किसान पाठशाला, कर्रा
(हमारी रणनीति)

समेकित आजीविका कृषि फार्म का एक नज़रिया

आजीविका कृषि फार्म स्वरोजगार के अवसरों के माध्यम के रूप में अनुमानित है, ऐसे में खूंटी के वातावरण और परिवेश के अनुरूप उत्पादित/ विकसित होने वाले फलों, पौधों, पशुओं आदि को बढ़ावा दिया जा रहा है। इस पहल से किसानों को ना केवल नए प्रजातियों की जानकारी मिलेगी साथ ही नए प्रजातियों के संभावित भौतिक व आर्थिक नुकसान को भी कम किया जा सकेगा।

किसान पाठशाला

क्षेत्र भ्रमण सह एक्सपोज़र

समेकित आजीविका कृषि फार्म

समेकित आजीविका कृषि फार्म

सफरनामा

जुलाई 2021

1. बाड़ लगाने का काम शुरू करना
2. स्तम्भ एवं कंटीले तारों की स्थापना
3. आयरन कोण वेल्डिंग।
4. अस्थायी बिजली कनेक्शन की स्थापना
5. विभिन्न फलों के पौधे खरीद और वितरण।
6. पौधों की उचित देखभाल, छिड़काव और उपचार।
7. समतलीकरण और फसल की खेती के लिए योजना और भूमि चयन।
8. तालाब निर्माण एवं जेसीबी एवं ट्रैक्टर से तालाब का विस्तार

अगस्त 2021

1. जेसीबी और ट्रैक्टर के साथ भूमि समतलन और योजना।
2. अंदर से सीमा के बाहर पानी की पाइपलाइन का कनेक्शन स्थापित करना।
3. जमीन की जुताई, जमीन समतल करना, एफवाईएम से मिट्टी में संशोधन, एसएसपी, एमओपी, रीजेंट आदि का मिश्रण लगाना और पपीते की खेती के लिए क्यारी तैयार करना।
4. अशोक के पौधे और बांस के पौधे लगाना।
5. बड़े तालाब का सौंदर्यीकरण, समतलीकरण।
6. फलदार पौधों के रोपण के लिए भूमि समतलीकरण, खाका तैयार करना और गड्ढा खोदना।
7. 250 फल पौधों का रोपण।
8. सुरक्षा के लिए समय पर पोषक तत्व लगाना, फफूंदनाशी, कीटनाशक समय पर लगाना।

सितंबर 2021

1. क्यारी तैयार करना, जुताई करना, पपीते के पौधे लगाना।
2. फाइकस गोल्डन, दुरंत और मिनी तगार की खरीद।
3. परिसर के सौंदर्यीकरण के लिए फाइकस गोल्डन, दूरंता और मिनी तगार का वृक्षारोपण।
4. 700 पपीते के पौधे लगाना।
5. तालाब के किनारे केले का रोपण।
6. सेब, नाशपाती, बीजरहित चूना, अंबाला के बागान।
7. समय पर निराई और मिट्टी की जुताई करें।
8. नीले तांबे, मेटलैक्साइल, कार्बेन्डाजिम, मैनसीजेब आदि का समय पर छिड़काव और भीगना।
9. कीटनाशक आदि का समय पर छिड़काव।
10. सभी पौधों की उचित देखभाल।

अक्टूबर 2021

1. भूमि समतल करना, जुताई और क्यारी तैयार करना।
2. 16000 स्ट्रॉबेरी के पौधों की खरीद।
3. नर्सरी तैयार करने के लिए विभिन्न उच्च मूल्य वाले सब्जियों के बीज के पात्र, कोकोपीट, वर्मीकम्पोस्ट, कीटनाशक आदि की खरीद।
4. हरी और पीली शिमला मिर्च, पत्ता गोभी, ब्रोकली, फूलगोभी, सलाद पत्ता, टमाटर, बैगन आदि की बीज बुवाई और नर्सरी तैयार करना।
5. 475 फीट के बोरवेल की स्थापना।
6. उचित देखभाल, नियमित विवाह, भीगना और फफूंदनाशी, कीटनाशक आदि का छिड़काव करना।

दिसंबर 2021

1. भूमि की तैयारी, सब्जी की खेती के लिए मिट्टी में संशोधन।
2. सब्जियों की खेती के लिए भूमि समतलीकरण और बिस्तर तैयार करना।
3. मल्च और ड्रिप पाइप लगाना।
4. शिमला मिर्च, टमाटर, ब्रोकली, लेट्यूस, फूलगोभी, पत्ता गोभी, बैगन, फ्रेंच आदि की खेती की गई।
5. पोषक तत्व, कवकनाशी, कीटनाशक आदि का समय पर प्रयोग और सिफारिश आधारित।
6. स्ट्रॉबेरी का रोपण।

मई 2022 से सितम्बर 2022

1. बत्तख शेड का निर्माण
2. मदर यूनिट की शुरूआत
3. तालाबों में मछलीपालन की शुरूआत
4. चीकू पौधों की शुरूआत
5. ड्रैगन फ्रुट की शुरूआत/सेब/अमरूद/निम्बू/चाय/कॉपी
6. मशरूम ईकाई की स्थापना
7. FPO का गठन
8. फ्रुट प्रसंस्करण ईकाई की स्वीकृति
9. प्रशिक्षण केन्द्र (आवासीय) की स्वीकृति

जनवरी 2022 से अप्रैल 2022 तक।

1. 300 पिलर और 1200 ड्रैगन फ्रूट प्लांट्स के साथ एक एकड़ ड्रैगन फ्रूट यूनिट की स्थापना
2. 12 इतालवी और 2 देसी मधुमक्खी बक्से के साथ मधुमक्खी इकाई सेटिंग। अलग-अलग मौसम में अलग-अलग फूलों में नियमित रूप से पलायन
3. 20 गिर गायों वाली डेयरी इकाई की शुरुआत।
4. 12 ब्लैक बंगाल बकरी के साथ बकरी पालन का परिचय।
5. विभिन्न स्थानीय बाजार में सब्जियों की कटाई, ग्रेडिंग और बिक्री।
6. शहद की कटाई और बिक्री।
7. दूध की उचित देखभाल, दूध पिलाना और बेचना
8. खरीफ मौसमी फसल जैसे करेला, मिर्च, फूलगोभी, पत्ता गोभी, टमाटर, खीरा आदि की नर्सरी तैयार करना।
9. एफपीओ गठन बैठक, नाम, आसपास के 15 गांवों के सदस्यों का पंजीकरण।
10. एफपीओ के उद्देश्य के बारे में प्रशिक्षण और अभिविन्यास, एफपीओ से निदेशक चयन, दस्तावेज़ संग्रह, ईमेल आईडी जनरेशन और उनके लिए आवेदन करने वाली पैन आईडी।
11. पोषण उद्यान और फूलों के बाग तैयार करना।
12. बत्तख सह मछली पालन शुरू करना।
13. मिट्टी का उपचार, डोलोमाइट, कांस्य, जस्ता आदि के साथ भूमि की जुताई।
14. नियमित रूप से निराई-गुड़ाई, मिट्टी को मिट्टी में मिलाना, उर्वरक, पोषक तत्व, कम्पोस्ट, कवकनाशी, कीटनाशक आदि लगाना।
15. निर्माणाधीन मशरूम इकाई

नवंबर 2021

1. विभिन्न सब्जियों की नर्सरी तैयार करना।
2. भूमि की जुताई, खाद के साथ मिट्टी में संशोधन, वर्मीकम्पोस्ट आदि।
3. खेत के अंदर सड़क निर्माण।
4. नियमित निराई, पौधों की देखभाल।
5. 7 एकड़ भूमि में ड्रिप पाइप कनेक्शन प्रणाली की स्थापना का कार्य प्रारंभ।
6. स्ट्रॉबेरी की खेती के लिए 1.3 एकड़ भूमि में बिस्तर तैयार करना, मल्चिंग करना।
7. स्ट्रॉबेरी का रोपण और नियमित रूप से भीगना और पौधों की देखभाल करना।

समेकित कृषि

यह किसान उत्पादन समूह एवं जिला परिषद् के सयुंक्त प्रयास से संचालित की जा रही है।

अभिसरण

किसान पाठशाला कर्रा अभिसरण के माध्यम से सींचा गया एक अद्भुत उदाहरण है जो जिला अंतर्गत क्रियान्वित किये जा रहे विभिन्न योजनायों की एक समेकित प्रतिबिम्ब दर्शाता है। शुरुआती प्रक्रिया में उपलब्ध विभिन्न संसाधनो एवं योजनाओं जैस - मनरेगा, जे. एस.एल.पी.एस., एस.सी.ए., 15वें वित आदि के एकीकरण एवं अभिसरण से की गई है।

पुनर्विभाजन

किसान पाठशाला अपने आप में एक ऐसा केंद्र बनकर उभर रहा है जिसकी रुपरेखा पर खूंटी जिले के अन्य प्रखंडों में भी प्रशिक्षण सह उत्पादन केंद्र विकसित हो सकेगा।

हब और स्पोक मंडल (एकीकृत)

किसान पाठशाला को एक हब (केंद्र) के रूप में विकसित किया जा रहा है। इस हब के माध्यम से किसानों के उत्पादों को एकीकृत कर उनके क्षमतावर्धन का कार्य किया जाना है। इसके साथ ही पैकेजिंग की प्रक्रिया पूर्ण करते हुए खुदरा एवं थोक बाज़ारो में उत्पादों की बिक्री भी सुनिश्चित की जा सकेगी।

प्रशिक्षण, उत्पादन सह् संग्रहण केंद्र

किसान पाठशाला का मुख्य उद्देश्य है कि वह खूंटी एवं उसके आस-पास के निवासियों के लिए प्रशिक्षण, उत्पादन सह संग्रहण केंद्र के रूप में लाभप्रद किया जा सके।

कृषि बागवानी

खूंटी जिले में मौसम के अनुरूप यहाँ होने वाले कुछ फलों को चिह्नित कर उन्हें बढ़ावा दिया जा रहा है।
किसानो को इन फलों की बाज़ार में अच्छी कीमत मिल रही है।

एवोकैडो

जलवायु की दृष्टि से एवोकैडो यह ट्रॉपिकल या सब-ट्रॉपिकल क्षेत्रों में गर्मियों में कुछ वर्षा का अनुभव करने वाले क्षेत्रों में उगाया जाता है।
एवोकैडो को एलिगेटर नाशपाती के नाम से भी जाना जाता है। इसके वृक्ष की लम्बाई लगभग 65 फीट तक जाती है।
एवोकैडो एक उच्च फाइबर युक्त फल है जिसमे है तरह के आवश्यक विटामिन एवं खनिज उपस्थित होते हैं।

जैविक नाम	पर्सिया अमरिकाना
किस्म	Shepherd
उपयुक्त मिट्टी	pH - 5.5 - 7.5
पौधों में दूरी	8 मी से 10 मी
जलवायु आवश्यकता	उष्णकटिबंधीय और उपोष्णकटिबंधीय जलवायु / तापमान- 3 से 35°C

ड्रैगन फ्रूट

जिला प्रशासन ने ड्रैगन फ्रूट को उच्च मूल्य वाली कृषि फसल के रूप में चिन्हित किया है। इच्छुक किसानों के बीच प्रचार-प्रसार किया जा रहा है।

ड्रैगन फ्रूट कई प्रकार के विटामिन और मिनरल का बहुत अच्छा स्रोत है। यह एक पौष्टिक एवं रोग निरोधक फल है। अभी जिले मे रेड ड्रैगन फ्रूट की वैरायटी को बढ़ावा दिया जा रहा हैं ।

एक पौधा 1.5 साल से 5 साल के दौरान औसतन 5 से 12 फल पैदा करता है/पहली फसल से पांचवीं फसल के दौरान फलों का औसत वजन 200 ग्राम से 300 ग्राम तक होता है।

किसान इसकी फसल से अच्छी कमाई कर सकते हैं । ड्रैगन फ्रूट की खेती के माध्यम से एक बार लगाने के बाद किसान इसके फल 25 साल तक काट सकते हैं।

जिला प्रशासन द्वारा उन्हें तकनीकी सहायता एवं वित्तीय सहायता प्रदान की जा रही है। किसान के क्षमतावर्धन कर खूंटी जिले को ड्रैगन फ्रूट कैपिटल बनाने की योजना है।

ड्रैगन फ्रूट्स का लागत लाभ विश्लेषण

पांच वर्षों में ड्रैगन फ्रूट्स का लागत लाभ विश्लेषण

- ड्रैगन फ्रूट की खेती के लिए ट्रॉपिकल जलवायु उपयुक्त है। इसकी वृद्धि के लिए उपयुक्त तापमान लगभग 25°C और जब पौधे पर फल बढ़ रहे हों, तो उसे 30°C से 35°C सेल्सियस के तापमान की आवश्यकता होती है, लेकिन इसका पौधा अधिकतम तापमान 40°C और न्यूनतम 7°C डिग्री सेल्सियस भी सहन कर सकता है।
- पांच साल में ड्रैगन फ्रूट की खेती पर सैपलिंग, टी-पोल, लेबर, फर्टिलाइजर और खाद सहित कुल खर्च 639,000 रुपये है।
- एक पौधा 1.5 साल से 5 साल के दौरान औसतन 5 से 12 फल पैदा करता है/ पहली से पांचवीं फसल तक फलों का औसत वजन 200 ग्राम से 300 ग्राम तक होता है।

1.67 एकड़ में कुल उत्पादन	21440 किग्रा और विक्रय मूल्य रु 100
पांच वर्षों में कुल राजस्व	21440*100 =INR 21,44,000
लाभ/हानि :- राजस्व-व्यय	(21,44,000-639,000)
पांच वर्षों में लाभ	15,05,000
औसत कमाई प्रति वर्ष	3,01,000

स्ट्रॉबेरी का लागत लाभ विश्लेषण

- स्ट्रॉबेरी समशीतोष्ण जलवायु में अच्छी तरह से विकसित होती है। कुछ किस्मों को ट्रॉपिकल जलवायु में उगाया जा सकता है। दिन के उजाले की अवधि 12 घंटे या कम और मध्यम तापमान फूल-कली बनने के लिए महत्वपूर्ण हैं।
- 1.5 एकड़ भूमि में स्ट्राबेरी की खेती में पौधा, मल्चिंग, श्रम, कीटनाशकों और उर्वरकों सहित कुल व्यय 503,000 रुपये है।
- एक पौधे की औसत उपज 300 ग्राम अनुमानित है और स्ट्रॉबेरी का थोक मूल्य 120rs/kg. है।

1.5 एकड़ में पौधे	36000
कुल उपज	36000*.3kg= 10,800kg
कुल राजस्व	10,800*120=1296,000
लाभ/हानि	राजस्व-व्यय 12,96,000-503,000=793,000 (लाभ)

अमरूद का लागत लाभ विश्लेषण

अमरूद को ट्रॉपिकल जलवायु में सफलतापूर्वक उगाया जा सकता है, यह आर्द्र और शुष्क दोनों जलवायु में पनपता है।

अमरूद 241 संयंत्र / 1 एकड़ के लिए लागत लाभ विश्लेषण।

आर्थिक उपज से पहले अमरूद का व्यय (0-3 वर्ष)।

संयंत्र	241x100 = रु 24100
श्रम लागत	98,000 रुपये (140 दिन / 2 श्रम प्रारंभिक 20 दिन + 3 वर्ष के लिए महीने में शेष 5 दिन)
उर्वरक/कीटनाशक	10,000 रुपये
विविध	5000 रुपये
तीन वर्षों में कुल व्यय	137,100 रुपये
विक्रय मूल्य @Rs 10/किग्रा	89170x10=8,91,700
कुल राजस्व	891700
लाभ/हानि	राजस्व-व्यय (891700-146,000)
लाभ	7,45,700 /-

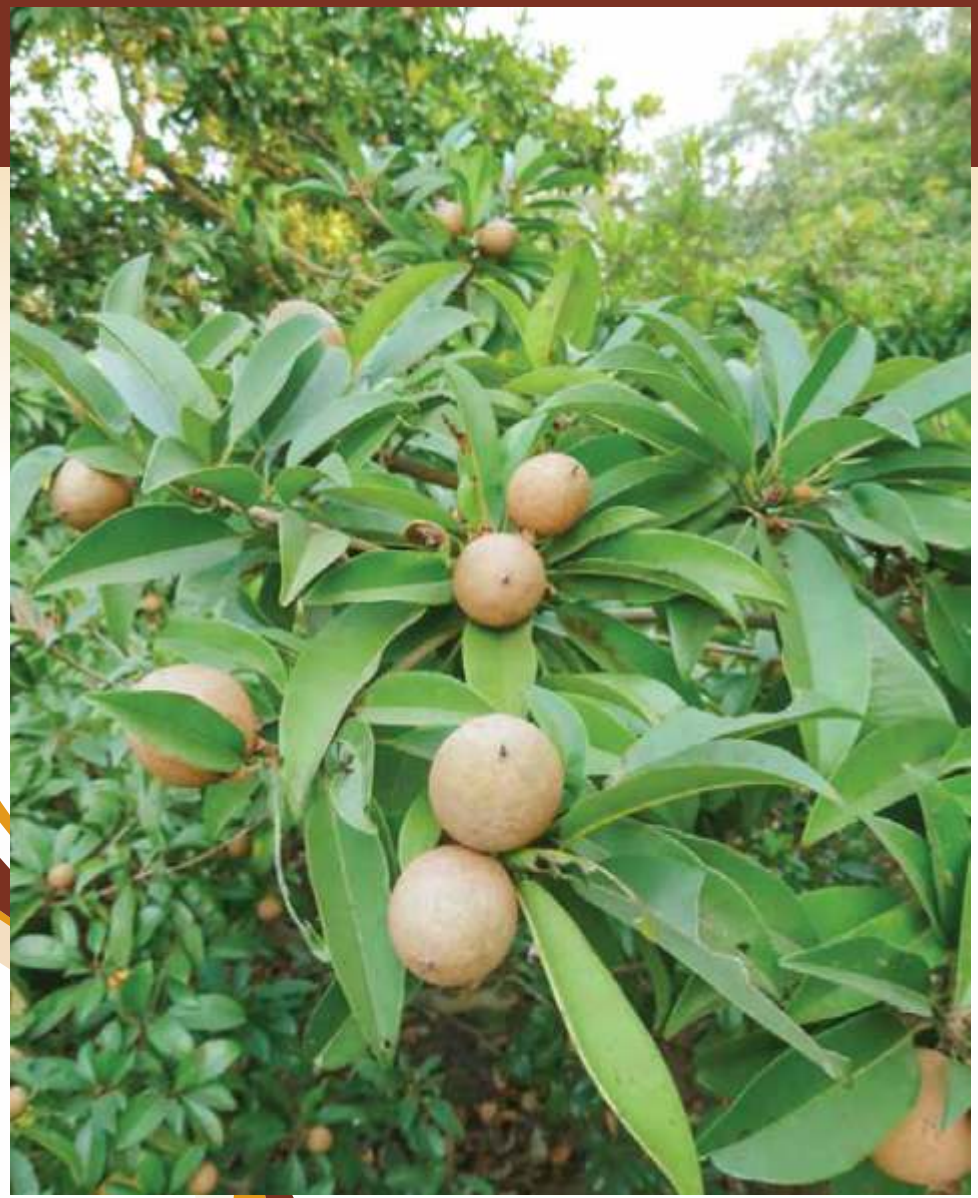

चीकू का लागत लाभ विश्लेषण

चीकू 117 पौधा / 1 एकड़ के लिए

चीकू के पेड़ ट्रॉपिकल वातावरण में सबसे अच्छे से बढ़ते हैं। इसे विभिन्न प्रकार की मिट्टी में उगाया जाता है लेकिन गहरी जलोढ़, रेतीली दोमट मिट्टी और अच्छी जल निकासी वाली काली मिट्टी चीकू की खेती के लिए आदर्श होती है।

आर्थिक उपज से पहले बीजरहित चूने का व्यय (0-3 वर्ष)

पौधा	250 * 100 = 25000 रुपये
श्रम लागत	(98,000 रुपये (140 दिन / 2 श्रम प्रारंभिक 20 दिन + 3 वर्ष के लिए महीने में शेष 5 दिन)
उर्वरक/कीटनाशक	10,000 रुपये
विविध	5000 रुपये
तीन साल में कुल व्यय	138,000 रुपये
विक्रय मूल्य @Rs 15/किग्रा	53,235*15=798,525
कुल राजस्व	798525
लाभ/हानि	राजस्व-व्यय (798,525-146,000)
	लाभ: 652,525

बीज रहित नीम्बू का लागत लाभ विश्लेषण

बीज रहित (निम्बू) के लिए लागत लाभ विश्लेषण (250/1 एकड़)

आर्थिक उपज से पहले बीज रहित नीम्बू का व्यय (0-3 वर्ष)

विक्रय मूल्य @ 3

पौधा	250 *150 =37500 रुपये
श्रम लागत	(120,000 रुपये (140 दिन / 2 श्रम प्रारंभिक 20 दिन + 4 वर्ष के लिए महीने में शेष 5 दिन)
उर्वरक/कीटनाशक	10,000 रुपये
विविध	5000 रुपये
तीन वर्षों में कुल व्यय	172,500 रुपये
10 वर्षों में कुल उत्पादन (250 संयंत्र)	950,000
10 वर्षों में कुल राजस्व	950,000 *3 = 28,50,000 रुपये
लाभ/हानि	राजस्व – व्यय (28,50,000-181,000)
	लाभ : 26,69,000

उच्च मूल्य कृषि

कृषि के नए एवं आधुनिक तकनीकों के माध्यम से मौसमिक सब्जियां जैसे टमाटर, गोभी, शिमला मिर्च, ब्रोकली, बैंगन, बीन्स आदि को बढ़ावा दिया जा रहा है।

मौसम के अनुरूप नए-नए फसलों को तैयार कर किसानों को अवगत कराया जा रहा है। नए फल जैसे-स्ट्रॉबेरी, ड्रैगन फ्रूट एवं तरबूज की खेती से किसानों को लाभान्वित करने की कोशिश की जा रही है।

वर्तमान में पार्क अंतर्गत उच्च मूल्य वाली फसलों पर विशेष ध्यान केंद्रित किया जा रहा है जैसे कि ड्रैगन फल- क्षेत्र में 1.68 एकड़ में कुल 2840 ड्रैगन फ्रूट की खेती की जा चुकी है, स्ट्रॉबेरी 1.5 एकड़ क्षेत्र में 22000 पौधे लगायी जा चुकी हैं और अनानास के पौधे भी लगाया जा रहा है।

अलंकारिक वृक्ष

गन्ना एवं बाँस जैसे पौधे पार्क की बाहरी सीमा के पास लगाए जा चुके है।

पार्क के विभिन्न हिस्सों में जाने के लिए रास्तों का प्रावधान किया गया है, जिसके दोनों ओर शोभाप्रद चन्दन एवं रुद्राक्ष आदि के वृक्ष लगाए गए हैं।

भविष्य में पार्क में पारंपरिक वृक्ष, सजावटी पौधे एवं सुगन्धित जड़ी-बुटियों वाले औषधीय पौधों को भी बढ़ावा देना परिलक्षित है।

मिश्रित खेती

अलंकृत वृक्ष के बीच में मिश्रित खेती को बढ़ावा दिया जा रहा है। इस प्रक्रिया के माध्यम से एक ही मौसम में एक से अधिक फसलों की खेती की जा रही है।

चाय एवं कॉफ़ी

कॉफी

जैविक नाम – कॉफ़ी अरेबिका

किस्म - अरेबिका

उपयुक्त मिट्टी pH- 4.9-5.6

पौधों में दूरी- 10 फीट × 10 फीट

जलवायु की आवश्यकता - अर्ध-उष्णकटिबंधीय जलवायु, गर्मी, आर्द्रता और प्रचुर वर्षा की आवश्यकता होती है

चाय

जैविक नाम – कैमेलिया साइनेंसिस

उपयुक्त मिट्टी pH - 4.0-5.5

कटाई का समय:- रोपण के तीन वर्ष बाद/मार्च-मई और अन्य महीनों के दौरान 10-14 दिनों के अंतराल पर।

पशुपालन

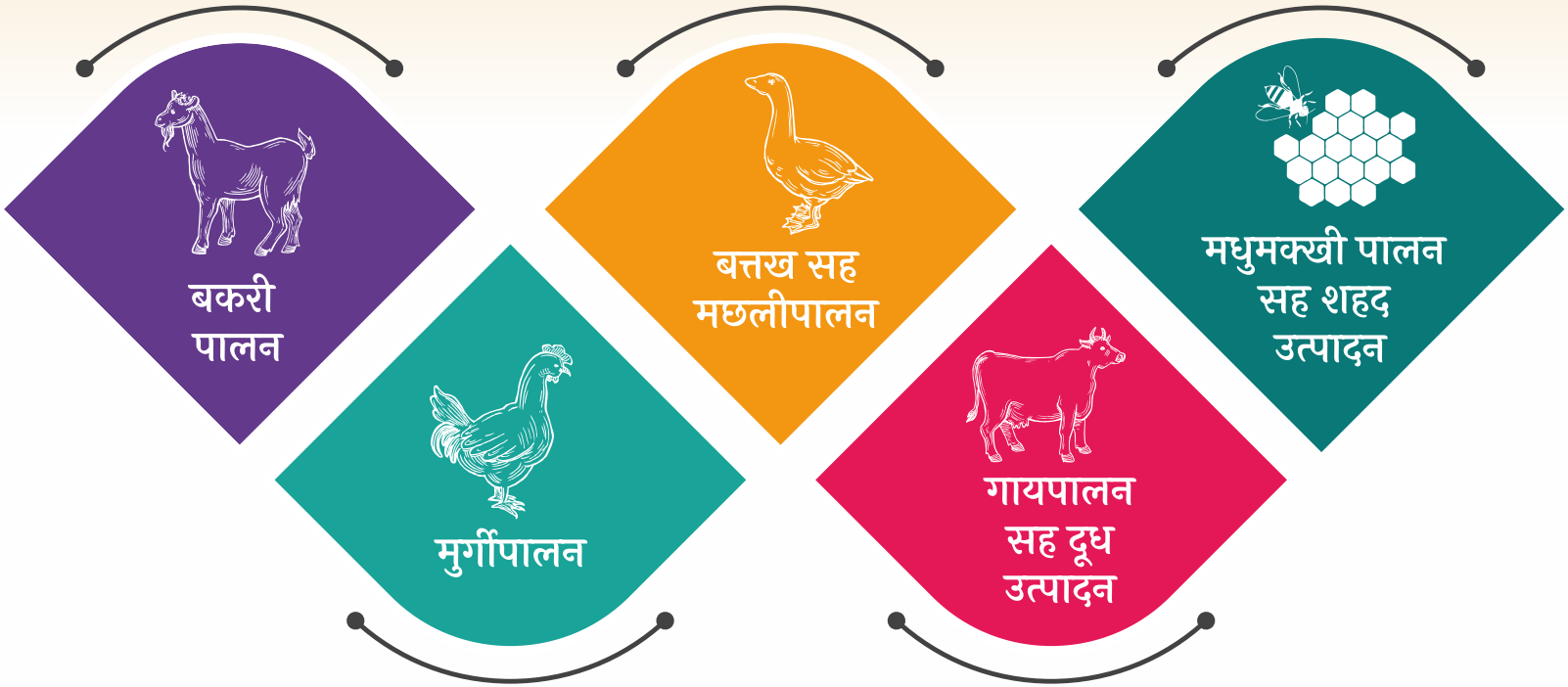
बकरी पालन
बत्तख सह मछलीपालन
मधुमक्खी पालन सह शहद उत्पादन
मुर्गीपालन
गायपालन सह दूध उत्पादन

गाय सह दूध उत्पादन

गाय पालन को बढ़ावा देने और उनसे बेहतर उत्पाद के लिए गीर प्रजाति के गायों को बढ़ावा दिया जा रहा है। गीर प्रजाति के 20 गायों से इसकी शुरुआत की गयी है। अब इन गायों की संख्या बढ़कर 28 हो गयी है।

एक गाय प्रतिदिन लगभग 5-6 लीटर दूध का उत्पादन करती है। गीर गाय का दूध डायबिटीज, हाई ब्लडप्रेशर समेत कई बीमारियों के मरीजों के लिए बहुत फायदेमंद होता है। विदेशी नस्ल की अन्य गायों या जर्सी की तुलना में काफी ज्यादा सुपाच्य और सेहतमंद होता है। इसके करीब साढ़े तीन लीटर ए-2 दूध में 8 ग्राम प्रोटीन पाया जाता है । इसमें पाई जाने वाली ए-1 कैसिइन प्रोटीन स्वास्थ्य के लिए काफी लाभदायक है।

खूंटी जिले में गीर गाय की उच्च गुणवत्ता वाली नस्ल आमतौर पर उपलब्ध नहीं है। इसलिए यह पहल किसानों को पार्क के माध्यम से उच्च गुणवत्ता वाली नस्लों तक पहुंच और तकनीकी सहायता के साथ इसकी देखभाल, पोषण मूल्य, चारे की गुणवत्ता, बीमारियों और टीकाकरण के बारे में जानकारी प्राप्त करने में मदद करेगी। भैंस की प्रजातियों को बढ़ावा देने के लिए 5 मुर्रा भैंस मंगवाई जा रही है।

दूध उत्पादन के लिए किसान पाठशाला की गायों को अन्य प्रखंडो में संसाधनों के तौर पर भेजे जाने की योजना बने जा रही है।

गीर गाय का लागत लाभ का विश्लेषण

- एक गाय का औसत व्यय जिसमें पोषक तत्व मिश्रण, बाजार से भोजन और श्रम लागत शामिल है: - 150 रुपये / दिन
  150*365=54,750(वर्ष)
- औसत दूध उत्पादन 5 लीटर/एक गाय है और दूध का विक्रय मूल्य 60/लीटर है (एक दिन: -60*5=300)

एक वर्षों में दूध देने की अवधि	330 दिन
एक वर्ष में राजस्व	300*330=99,000
लाभ/हानि:- राजस्व-व्यय	(99,000-54,750)
लाभ	44,250 वर्ष/ गाय

बत्तख-सह-मछलीपालन

जल संसाधन के श्रोतों में समेकित बत्तख-सह-मछलीपालन को बढ़ावा देने के लिए इंडियन रनर और खाकी कैंपवेल प्रजाति के बत्तख और रेहू, कतला, मृगल के साथ-साथ जॉइंट तेलापिया प्रकार की मछली को संपोषित किया जा रहा है। इस पहल से एक जल श्रोत से दो से तीन प्रकार के जीविकोपार्जन उपलब्ध हो पाएंगे। इसके अतिरिक्त बत्तख के चूजों के लिए भी हैचरी इकाई की स्थापना की जा चुकी है।

भविष्य में हमारा उद्देश्य बत्तखों की उच्च मूल्य की नस्ल को सीमांत किसानों के बड़े वर्ग को सस्ती कीमत पर उपलब्ध कराना है।

बत्तख-सह-मछलीपालन के समेकित पालन के माध्यम से न केवल लगत की कमी आती है बल्कि मुनाफे में भी बढ़ोतरी होती है। इस प्रक्रिया के दौरान बतखों के मल का प्रयोग मछलियों के लिए भोजन का काम करता है।

आईएमसी (मछली) का लागत लाभ का विश्लेषण

आईएमसी (मछली) -1 एकड़ के लिए लागत लाभ विश्लेषण

एक एकड़ तालाब में, 30 किलो बीज (फिंगरलिंग) की आवश्यकता होती है / 1 किलो @ 350Rs.

मृत्यु दर लगभग 20-25%

एक एकड़ में फिंगरलिंग की कुल लागत	350*30=10,500
30 किग्रा फिंगरलिंग में	8000 पीस
अन्य खर्च चारा, चूना, दवा, श्रम और विविध सहित	30,500
एक एकड़ में कुल खर्च	41,000 रुपये
1 वर्ष में IMC (मछली) की औसत वृद्धि	1kg
एक वर्ष में कुल उत्पादन (मृत्यु के बाद 6000)	6000 किग्रा
बिक्री मूल्य @	160Rs/kg
कुल आय	6000*160=9,60,000
लाभ/हानि: आय -व्यय	(960,000-41,000)
	लाभ :919,000

बकरीपालन

किसानों के आर्थिक विकास में पशुधन एक महत्वपूर्ण भूमिका निभाता है।

आदिवासी क्षेत्रों में किसान मिश्रित कृषि प्रणाली यानी फसल और पशुधन का संयोजन बनाए रखते हैं, जहां एक उद्यम का उत्पादन दूसरे उद्यम का इनपुट बन जाता है, जिससे संसाधन दक्षता का एहसास होता है।

बकरीपालन के संभावनाओं को बढ़ावा देने के लिए बेहतर प्रजाति को इस्तमाल में लाया जा रहा है। ब्लैक बंगाल प्रजाति की एक दर्जन बकरियों को एक शेड में पालन किया जा रहा है।

ब्लैक बंगाल प्रजाति उच्च मूल्य की नस्ल है। भविष्य में हम शुरू में ब्लैक बंगाल के लिए एक कृत्रिम गर्भाधान (Artificial insemination, AI) केंद्र खोलने और बाद में किसानों की सहायता के लिए अन्य किस्मों को भी पेश करने की योजना बना रहे हैं।

ब्लैक बंगाल (बकरी) का लागत लाभ का विश्लेषण

एक वर्ष में बकरी पालन की लागत	5000 (पोषण मिश्रण, बाजार से चारा)
2 साल में कुल खर्च	10,000
एक वर्ष में औसत वजन	13kg
दो वर्ष में	औसत 26 किग्रा
बकरी का विक्रय मूल्य (दो वर्ष)	16,000
लाभ/हानि	व्यय - राजस्व (10,000-16,000) लाभ:- 6000

मुर्गीपालन

खूंटी में सफेद चिकन (ब्रॉयलर) और देशी किस्म के चिकन आमतौर पर पाए जाते हैं। ब्रॉयलर किस्मों की प्रजातियों की देखभाल में अधिक समय लगता है और यह रोग प्रवृत भी होते हैं। इसे ध्यान में रखते हुए मुर्गीपालन के लिए सोनाली प्रजाति को बढ़ावा दिया जा रहा है। यह अंडा और मांस उत्पादन, तेजी से विकास और कम मृत्यु दर गहन कृषि प्रणाली के संबंध में बेहतर प्रदर्शन करने के लिए सूचित किया गया है।

चूजों को एक हज़ार से दो हज़ार के बैच में 15 दिनों तक के लिए हार्डनिंग केंद्र में रखा जाता है ताकि चूजों को बीमारी से बचाते हुए रोग मुक्त बनाया जा सके।

चूजों की आत्मनिर्भरता के लिए फार्म में हैचरी इकाई की स्थापना की गई है, इस पहल से फार्म द्वारा ग्रामीणों को उचित दर पर चूजे उपलब्ध कराये जा सकेंगे। इस स्थान पर लेयर व ब्रायलर दोनों प्रकार के मुर्गियों को रखा जाता है। लेयर मुर्गी का इस्तेमाल अण्डों के उत्पादन के लिए किया जाता है तो वही ब्रायलर मुर्गियों का इस्तेमाल मीट के लिए भी किया जाता है।

आने वाले समय में कड़कनाथ चिकन, कुरोइलर की नस्ल, और अंडों के लिए लेयर बड्र्स रखे जाएंगे।

पार्क में एक संपूर्ण पोल्ट्री पारिस्थितिकी तंत्र बनाने का विचार है जहां हम पक्षियों की देखभाल, टीकाकरण, चारा आदि के मामले में किसानों को तकनीकी और मूलभूत सहायता प्रदान करने में सक्षम हैं।

सोनाली नस्ल (पोल्ट्री) के लिए लागत लाभ विश्लेषण

किसान पाठशाला में एक हैचरी इकाई का भी अधिष्ठापन किया गया है। इस इकाई की क्षमता 2000 चूजे प्रति सप्ताह की है। इस प्रणाली की मदद से किसानो को स्वास्थ्य एवं रोग मुक्त चूजे मिलने में असानी होगी।

लागत लाभ विश्लेषण	1120 पक्षी (1000 मादा/120 नर)
6.5 महीने में 1120 पक्षियों में कुल खर्च	543,000
चूजे	25*1120 =28000
फ़ीड	(50 किग्रा) 220बीग्स*2200= रु 484,000
वैक्सीन	1000
श्रम लागत	30,000
अंडा उत्पादन	130 /पक्षी (5% +2% मृत्यु दर)
1064 पक्षियों में कुल अंडा उत्पादन	130*1064=138320 अंडे
बिक्री मूल्य @5/अंडा	1,38,320*5=6,91,600
पक्षी का विक्रय मूल्य	100/पक्षी 100*1043=1,04,300
कुल आय (अंडा+ पक्षी)	691,600+1,04,300
लाभ/हानि: आय-व्यय	(795900-543,000)
	लाभ: 2,52,900 लाभ

मधुमक्खी सह शहद उत्पादन

झारखण्ड राज्य में कृषि के साथ बागवानी की भी अच्छी गुंजाइश है। यहाँ के जंगल, करंज, जामुन, नीम, सखुआ, सागवान, शीशम, सेमल, युक्लिप्टस, इमली, बकाईन आदि वृक्षों से भरे हुए है। जिससे शहद का उत्पादन आधिक होता है। इस तरह हम देखते है कि झारखण्ड राज्य मधुमक्खी पालन के लिए अत्यंत ही उपयुक्त है।

मधुमक्खी की व्यवसायिक कृषि आमजनों के लिए फायदेमंद साबित होने वाली है, ऐसे में मधुमक्खी से शहद उत्पादन करने के लिए इटालियन और देशी प्रजाति के 50 डिब्बे लाये गये हैं। प्रत्येक मौसम में इसकी क्षमता 150-200 किलो शहद उत्पादन की है। डिब्बों के इस संख्या को 100 इकाइयों तक बढ़ाने की योजना है।

जिले में मधुमक्खी के बक्सों की उपलब्धता कम नहीं है, इसलिए भविष्य में पार्क किसानों के लिए एक संसाधन केंद्र के रूप में काम करेगा, ताकि उन्हें कम लागत पर उच्च लाभ मिल सके।

मधुमक्खी (इटालीयन) का लागत लाभ का विश्लेषण

- शहद की खेती के लिए निश्चित लागत: - 9300 (हनी बॉक्स, हनी एक्सट्रैक्टर, हाइव एक बॉक्स के लिए 5), मास्क, कवर, कंटेनर सहित।
- निर्धारित लागत एवं अन्य व्यय सहित एक वर्ष में शहद की खेती में कुल व्यय:- 11,0000

पांच वर्षों में व्यय	11000+10,000 अगले चार वर्ष) =21,000
एक बॉक्स में औसत उपज	35Kg
विक्रय मूल्य	250*35=8750
पांच साल में कुल राजस्व	8750*5=43,750 प्रति बॉक्स
लाभ/हानि:- राजस्व- व्यय	(43750-21000)
लाभ	22750 प्रति बॉक्स

अन्य सहयोगी स्तम्भ

केचुआ खाद

"काला सोना," कृमि खाद मिट्टी को सूक्ष्म पोषक तत्वों का एक समृद्ध स्रोत प्रदान करता है और यहां तक कि पौधों को कीट और रोग से लड़ने वाले गुण प्रदान करने के लिए भी पाया गया है।

यह जैव उर्वरक के रूप में कार्य करता है, मिट्टी के पोषक तत्वों को पुनर्स्थापित करता है, मिट्टी को स्थिर करता है, और लंबी अवधि में मिट्टी की उर्वरता को बढ़ाता है; यह एक सर्कुलर अर्थव्यवस्था के रूप में एक लाभदायक उद्यम के रूप में दिखाया गया है।

फार्म अंतर्गत इकट्ठा किये गये सभी प्रकार के जैविक कचरे के उचित प्रबंधन एवं सही इस्तमाल के उद्देश्य से केचुआ खाद की 11 इकाइयों को बढ़ावा मिल रहा है। इस खाद का इस्तमाल खेतों में मिटटी की उर्वरकता बढ़ाने के लिए किया जा रहा है। खाद के पिट से निकल रहे पानी को इकट्ठा कर वर्मी-वाश के काम में लाया जा रहा है।

आने वाले दिनों में इसका उद्देश्य किसानों को इस जैविक तकनीक के बारे में शिक्षित करना और इसे पार्क में सस्ती दर पर उपलब्ध कराना है।

अजोला उत्पादन एवं लाभ

कृषि उत्पादों की कीमत में अनिश्चितता और कृषि आदानों की तेजी से बढ़ती लागत, भूजल स्तर में गिरावट के कारण कृषि लागत बढ़ गई है। यही कारण है कि पिछले कुछ वर्षों में पेशे के रूप में खेती के प्रति किसानों का आकर्षण कम हो रहा है। इस समस्या के समाधान के लिए अजोला की खेती बहुत ही लाभकारी हो सकती है।

अजोला एक महत्वपूर्ण बहुगुणी फर्न है, जिसका उपयोग पशुओं, मछली एवं कुक्कुट के चारे के रूप में उपयोग किया जाता है और इसकी लागत भी बहुत कम होती है।

अजोला सस्ता, सुपाच्य एवं पौष्टिक पूरक पशु आहार है। इसे खिलाने से वसा व वसा रहित पदार्थ सामान्य आहार खाने वाले पशुओं के दूध में अधिक पाई जाती है।

दुधारू पशु को अजोला खिलाने से दूध का उत्पादन और गुणवत्ता बढ़ती हैं। अजोला दुधारू पशुओं के लिए घी का काम करता हैं। किसानों के जीविकोपार्जन के लिए वरदान साबित हो रहा है।

इस किसान पाठशाला के माध्यम से किसानों को उन्नत तकनीक से प्रशिक्षित कर अजोला के लाभ एवं उपयोग की जानकारी दी जाएगी।

पौली नर्सरी हाउस

मिट्टी रहित पौधों को तैयार करने एवं बीज से पौधे निकलने के लिए संतुलित वातावरण प्रदान करने के लिए पौली नर्सरी हाउस की स्थापना की गयी है।

वर्तमान में कृषि पार्क में क्रमशः 169 वर्ग मीटर और 560 वर्ग मीटर आकार के 2 पॉलीहाउस हैं, जिसमें उच्च मूल्य वाली फसलें जैसे कि पीली शिमला मिर्च, ब्रोकोली, ड्रैगन फ्रूट, स्ट्राबेरी, एवोकाड़ो, बीज रहित नीम्बू आदि उगाने पर विशेष ध्यान दिया जा रहा है।

सोलर लिफ्ट सिंचाई एवं टपक सिंचाई सह मलचिंग

बड़े पैमाने पर खेतों में पटवन की सुविधा के लिए सोलर आधारित 5 HP के लिफ्ट सिंचाई की स्थापना की गयी है।

इस इकाई के माध्यम से विभिन्न आउटलेट के ज़रिए फार्म के कोने-कोने तक पानी की सुविधा उपलब्ध होगी। जल का मुख्य श्रोत फार्म में विकसित किये गये दो तालाब होंगे।

खूंटी जिले में पानी की कमी रहती है, ऐसे में रबी और ज़ैद के मौसमों में किसान खेती नहीं कर पाते हैं। टपक सिंचाई कम पानी की लागत में दोगुने उत्पाद का एक सशक्त जरिया है। सभी उच्च मूल्य कृषि और पौधों को टपक सिंचाई के माध्यम से मलचिंग कर लगाया जा रहा है।

टपक सिंचाई के माध्यम से 90 प्रतिशत तक पानी की बचत होती है तो वहीं खाद-बीज की लागत भी 60 प्रतिशत तक कम आती है। टपक सिंचाई के लिए ज़मीन सिर्फ एक बार तैयार करनी होती है अतः खेत तैयारी में भी 66 प्रतिशत की बचत संभव होती है।

प्रसंस्करण इकाई

प्रसंस्करण इकाई

मनरेगा के तहत आम और अन्य मिश्रित फलों की खेती को बढ़ावा दिया जा रहा है। ऐसे में आने वाले कुछ वर्षों में जिले में होने वाले फलों के उत्पादों को मद्देनज़र रखते हुए पलाश फ्रूट प्रसंस्करण इकाई की स्थापना की जा रही है। इस इकाई के माध्यम से फलों को एकत्रित करने, सफाई कर प्रसंस्करण करने एवं पैकेजिंग व ब्रांडिंग के साथ-साथ विपणन के कार्यों को भी अंजाम दिया जायेगा।

इस प्रसंस्करण इकाई की मदद से आम, टमाटर, इमली, कटहल आदि फलों का प्रसंस्करण कर सही पैकेजिंग के साथ बाज़ार में उतारने की योजना है।

मशरूम उत्पादन

मशरूम के बढ़ते बाज़ार एवं इसकी संभावनाओं को मद्देनज़र रखते हुए एक मशरूम उत्पादन केंद्र की स्थापना की जा रही है। इस इकाई के माध्यम से मशरूम उत्पादन के लिए बीज का निर्माण से लेकर बंद कमरे में मशरूम उत्पादन के सम्पूर्ण प्रक्रिया को दर्शाया जा रहा है। जिसके लिए 3 स्वचालित चैंबर बनाए गए हैं।

वर्तमान में स्थानीय बाजार में 60-90 ग्राम मशरूम 50-60 रुपये में बेचा जाता है।

मशरूम की खेती एक लाभदायक उद्यम है क्योंकि मशरूम की खेती कमरे में की जा सकती है और इसके लिए छोटे क्षेत्र की आवश्यकता होती है और इसलिए भूमि में भारी निवेश की आवश्यकता नहीं होती है। इसके अलावा, आधुनिक तकनीक का उपयोग उच्च उपज, उत्पादन की कम लागत और पूरे वर्ष उत्पादन सुनिश्चित करता है।

भविष्य में, ओएस्टर मशरूम की खेती को भी शुरू करने का लक्ष्य है। पार्क किसानों के लिए कम निवेश वाली उच्च मूल्य वाली फसल तकनीक सीखने के लिए एक संसाधन केंद्र के रूप में कार्य करेगा।

सोलर कोल्ड स्टोरेज

किसान पाठशाला के प्रांगन में अभिशरण के माध्यम से 5MT के सोलर कोल्ड स्टोरेज का अधिष्ठापन किया गया है ।

यह कोल्ड स्टोरेज फार्म के उत्पादित किये जा रहे फल/सब्जी/दूध इत्यादि के बेहतर रख-रखाव में कारगर साबित हो रहा है।

इसकी मदद से उत्पादों को ताज़ा रखने और लम्बे समय तक संरक्षित रखने में मदद मिलेगी ।

आवासीय प्रशिक्षण की सुविधा

इस पार्क में एक किसान पाठशाला एवं किसानों के ठहरने व आवासीय प्रशिक्षण के लिए 2 तल्ले के भवन का अतिरिक्य निर्माण किया जा रहा है। जिसमें लगभग 50 किसान लाभुकों के रहने की वयवस्था की जा रही है। किसान पाठशाला का उद्देश्य किसानों को कृषि के सैद्धांतिक और व्यावहारिक दोनों पहलुओं पर प्रशिक्षित करना है। किसानों की पाठशाला में उच्च मूल्य की फसलें, पशुपालन, बागवानी, सिंचाई की उन्नत तकनीक, एकीकृत एवं बहुपरत खेती तथा पॉली हाउस जैसे प्रदर्शन के लिए सभी संसाधन एवं सुविधाएं एक ही स्थान पर उपलब्ध होंगी।

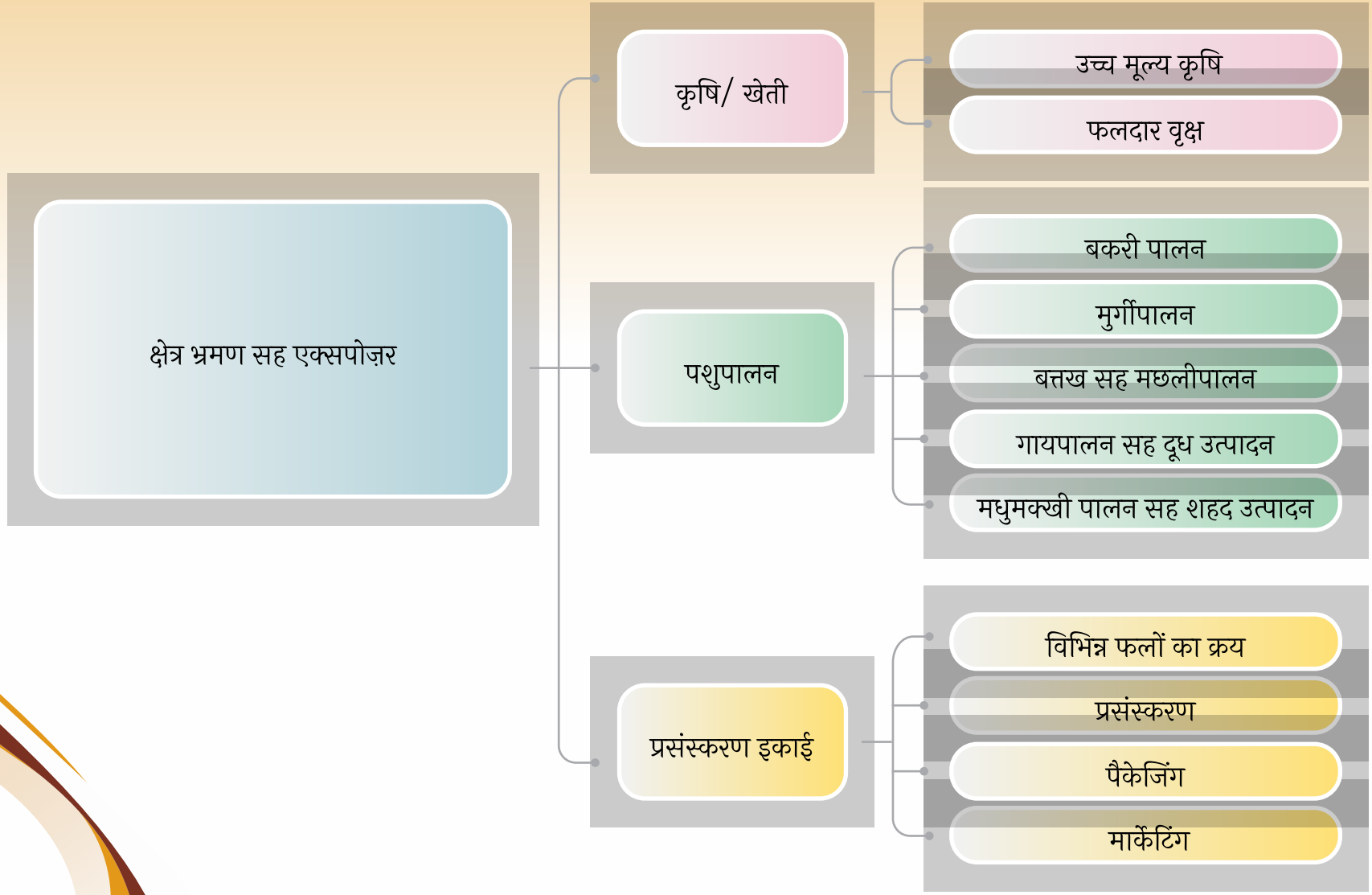

मोडयूल एवं तकनीकी विशेषज्ञ की उपलब्धता

किसानों को बेहतर तथ्यों से अवगत कराने के लिए मोडयूल भी विकसित किया जा रहा है। यह मोडयूल किसानों को खेती के विषय में मूल-भूत जानकारी प्रदान करने का एक माध्यम बनेगा।

इस मोडयूल की मदद से प्रशिक्षक किसानों को सम्पूर्ण कार्य प्रणाली एवं तकनीकी जानकारियों से अवगत कराएँगे।

सहज मोड्यूल की संरचना के साथ-साथ इस पाठशाला में स्थानीय विषय विशेषज्ञ एवं अन्य राज्यों से भी विशेषज्ञों को प्रशिक्षण उपलब्ध करने हेतु आमंत्रित किया जायेगा।

एग्रो टूरिज्म

आनेवाले दिनों में इस पार्क को अनावरण/भ्रमण केंद्र के साथ-साथ पर्यटन का केंद्र बनाने की भी योजना है। एग्रो-टूरिज्म की मदद से शहरी पर्यटक खेत-खलिहान और खेती के बारे में रूचि के अनुसार जानकारी प्राप्त कर सकेंगे।

पार्क में निर्मित तालाब के पास कुछ कॉटेज बनाने की भी योजना है, जिससे बाहर से आये हुए आगंतुक पर्यटकगन वहां रहकर मनोरंजन के साथ-साथ विभिन्न कृषि सम्बंधित जानकारी भी प्राप्त कर सकेंगे।

इस एग्रो-टूरिज्म के माध्यम से किसान पर्यटकों को खेतों के बीच जाकर प्राकृतिक माहौल में फसलों, उत्पादों एवं वहां की जा रही गतिविधियों को देखने एवं प्रयोग करने का अवसर भी मिलेगा।

एग्रो-टूरिज्म के उद्देश्य से पर्यटकों को फार्म में रहने एवं खाने की सुविधा भी उप्दब्ध करने का लक्ष्य है, ताकि पर्यटक फार्म स्टे, फार्म विजिट, फार्म एक्टिविटी की सुविधा का आनंद प्राप्त कर सके।

एग्रो-टूरिज्म ग्रामीणों के विकाश कृषि उत्पादों को बाज़ार की उपलब्धता, कृषि आधारित उद्योगों को बढ़ावा, ग्रामीण युवाओं को रोज़गार की संभावना, कला, संस्कृति एवं सामाजिक परम्परा को संधारित रखने का मूल उद्देश्य परिलक्षित है।

समेकित कृषि

प्रसंस्करण

आवासीय प्रशिक्षण

किसान पाठशाला

निष्कर्ष

भविष्य में फार्म का संचालन सहकारिता के तर्ज पर किया जायेगा। इसके हितधारकों में सखी मंडलों के संकुल संगठन व किसान उत्पादक समूह के प्रतिनिधियों की संयुक्त भागीदारी रहेगी। यह प्रयास खूंटी के ग्रामीण एवं दूरस्त लोगों को नए कृषि प्रणाली से अवगत कराते हुए अपने निजी स्तर पर इसे दोहराने का है।

साथ ही इलाके के सकल घरेलु उत्पाद को बल देने और आत्मनिर्भरता बढ़ाने में कारगर साबित होगी। हमारा प्रयास है की किसान इस पहल को अपने जीवन में उतारें एवं अपने और अपने परिवार की आमदनी को बढ़ावा दें साथ ही पलायन कर रहे ग्रामीणों की दर में गिरावट आये। इस हेतु आने वाले दिनों में जिले के सभी प्रखण्डों में किसान लाभुकों के लिए एक-एक किसान पाठशाला की स्थापना करने का प्रस्ताव रखा गया है।

किसान पाठशाला

सरकार
श्री हेमन्त सोरेन

कर्रा

समेकित आजीविका कृषि फार्म

जिला- खूँटी

BETTER WORLD FOUNDATION | tri Transform Rural India